B.A. (Hons) Part II
Philosophy - Paper III

Topic - Object of Moral Judgement.

Dr. Sachidanand Prasad.
Deptt. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

हमलोग यह जानते है कि ऐच्छिक कर्म ही नैतिक निर्णय के विषय हैं लेकिन ऐच्छिक कर्म के दो पहलू है। - पहला आन्तरिक और दूसरा बाह्य। प्रत्येक ऐच्छिक कर्म मे शारीरिक क्रिया के पहले इच्छा, इच्छा-संघर्ष, लक्ष्य का विचार, साधन का विचार, चुनाव, संकल्प आदि की मानसिक क्रियाएं हो जाती है और शारीरिक चेष्टा के बाद उसका कुछ परिणाम होता है। - प्रत्याशित या अप्रत्याशित। मानसिक क्रियाएँ, ऐच्छिक कर्म के आन्तरिक और क्रिया का फल बाह्य पहलू है। अब प्रश्न यह उठता है कि नैतिक निर्णय का आधार क्या है - कर्मो का फल या कर्म का आन्तरिक पहलू। अर्थात कर्म-फल के अच्छे या बुरे होने से किसी कर्म को अच्छा या बुरा मानना चाहिए या इच्छा, प्रयोजनादि के अच्छे-बुरे होने से? नैतिक निर्णय का विषय क्या है कर्म फल या हमारे विचार? क्या कर्म का बाह्य परिणाम उसके नैतिक गुण का

निर्णायक है ? इस समस्या पर नीतिशास्त्र में
दो भिन्न विरोधी मत है / पहला मत सुखवादियों
का और दूसरा मत अन्त: अनुभूतिवादियों का है
सुखवादियों के अनुसार कोई कर्म अच्छा
या बुरा अपने परिणाम के कारण ही है/
यदि किसी कर्म का फल खराब हुआ तो
कर्म खराब और यदि फल अच्छा हुआ तो
कर्म अच्छा होगा / लेकिन यह मत दोषपूर्ण
प्रतीत होता है क्योंकि जिस उद्देश्य से मनुष्य
कोई काम करता है वैसा ही उसका
परिणाम नहीं होता / कभी कभी उत्तम उद्देश्य
से कोई काम किया जाता है लेकिन उसका
परिणाम बुरा हो जाता है/ उदाहरण के लिए
डाक्टर भले के लिए आपरेशन करता है लेकिन
कभी-कभी आपरेशन के वक्त रोगी की मृत्यु हो
जाती है/ अन्त: अनुभूतिवादियों और आदर्शवादियों
के अनुसार केवल प्रयोजन ही नैतिक निर्णय का
विषय है क्योंकि इस सिद्धान्त के अनुसार यदि
किसी कर्म का प्रयोजन भला है तो कर्म
भी अच्छा होगा और यदि प्रयोजन खराब
है तो कर्म भी खराब कहा जायेगा / कर्म
का नैतिक मूल्यांकन करने में उनके अनुसार
किस साधन, अर्थात् उपाय से काम किया
गया है, इसका महत्व नहीं है/ सुखवादियों
की तरह अन्त:अनुभूतिवादियों ने मनोभावों और
संवेगों को वास्तविक प्रेरणा अर्थात् प्रयोजन माना
है/ जिस भाव से जो कर्म किया जाता है
वही उसका प्रयोजन है/

REDMI NOTE 9
AI QUAD CAMERA